वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 452
ISBN 978-93-84003-63-0

श्री ऋषभदेव व्रत

–प्रस्तुति–

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

– प्रकाशक –

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.
फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org,
www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2541	मूल्य
1100 प्रतियाँ	चैत्र कृ. 9, 15 मार्च 2015	10/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–
गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी
–: मार्गदर्शन :–
प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
–: निर्देशन एवं सम्पादक :–
कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्ति श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी
–: प्रबन्ध सम्पादक :–
जीवन प्रकाश जैन
सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग-ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

-कर्मयोगी पीठाधीश
स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

जैनधर्म के वर्तमानकालीन प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव हैं। जिन्होंने आज से कोड़ाकोड़ी पूर्व शाश्वत तीर्थ अयोध्या में जन्म लिया। प्रजा को जीने की कला सिखाई।प्रयाग में वटवृक्ष के नीचे दीक्षा धारण करके उत्कृष्ट तप किया। जहाँ पर परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से श्री ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का भव्य निर्माण हुआ है। प्रयाग में ही भगवान को केवलज्ञान हुआ। अतः प्रयाग में समवसरण मन्दिर का भी निर्माण किया गया है। भगवान ने कैलाश पर्वत से मोक्ष प्राप्त किया। प्रयाग में भव्य विशाल कैलाश पर्वत का भी निर्माण किया गया है जहाँ पर ऋषभदेव की उत्तुंग प्रतिमा एवं तीन चौबीसी प्रतिमाएँ विराजमान हैं।

वर्तमान में जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा से सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी (महाराष्ट्र) में विश्व की सबसे ऊँची अखण्ड पाषाण में बनने वाली भगवान ऋषभदेव की 108 फुट की विशालकाय दिगम्बर जैन प्रतिमा का अन्तर्राष्ट्रीय पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महामस्तकाभिषेक महोत्सव माघ शु. 3 से 10, वीर नि. सं. 2542 दिनांक 11 से 17 फरवरी 2016 में होने जा रहा है।

यह ऋषभदेव व्रत वर्तमान के सभी संकटों को दूर करने वाला एवं सर्वसिद्धि को प्रदान करने वाला है।

इस ऋषभदेव व्रत को करके सभी नर–नारी इच्छित फल को प्राप्त करें, यही मंगल भावना है। पूज्य माताजी दीर्घायु हों एवं स्वस्थ रहें और अपना मंगल सानिध्य एवं आशीर्वाद पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में प्रदान करें यही जिनेन्द्र-देव से मंगल प्रार्थना है।

परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा घोषित
'श्री ऋषभदेव महामहोत्सव वर्ष'
ऋषभदेव जयन्ती, चैत्र कृष्णा नवमी (2015–2016) वर्ष के अन्तर्गत प्रकाशित

प्रस्तावना

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

कर्मों को निर्जीर्ण करने के लिए व्रत, उपवास आदि कारण हैं। परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने **सर्वसंकटहर एवं सर्वसिद्धिप्रदायक 'ऋषभदेव व्रत'** करने की प्रेरणा प्रदान की है। इस पुस्तक में ऋषभदेव व्रत की विधि एवं ऋषभदेव व्रत के 108 व्रत के जाप्य मंत्र हैं। उद्यापन की विधि भी इसमें लिखी हुई है। इस छोटी सी पुस्तक में पूज्य माताजी ने श्री ऋषभदेव की पूजा, श्री ऋषभदेव का चरित एवं श्री ऋषभदेव स्तोत्र भी दिया है।

ऋषभदेव व्रत के साथ ही इसमें एक और व्रत है जिसका नाम है **'सर्वदोष निवारण व्रत'।** इस व्रत में 18 दोष निवारण के 18 व्रत हैं। इसमें अर्हंत देव की पूजा है। इस व्रत में पढ़ने हेतु **''सर्वदोष निवारण स्तोत्र''** भी दिया है। यह दोनों ही व्रत बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं इसे करके भव्य जीव नियम से एक दिन कर्मों को नष्टकर सिद्धपद को प्राप्त करेंगे।

इस पुस्तक में व्रत के बाद में श्री तीर्थंकर स्तवन, श्री ऋषभदेव की मंगल आरती एवं मांगीतुंगी में बन रही 108 फुट उत्तुंग ऋषभदेव की मूर्ति एवं मांगीतुंगी तीर्थ का भजन है।

दो शब्द

-आर्यिका सुव्रतमती

बीसवीं सदी में मुनि परम्परा को जीवंत करने वाले प्रथमाचार्य चारित्र-चक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज के प्रथम पट्टशिष्य चारित्र चूड़ामणि आचार्य श्री वीरसागर महाराज के कर कमलों से आर्यिका दीक्षा को प्राप्त करने वाली अवध की अनमोल मणि, युगप्रवर्तिका, चारित्रचन्द्रिका, राष्ट्रगौरव, सिद्धान्त चक्रेश्वरी, वाग्देवी जैनसामाज की सर्वोच्च साध्वी आर्यिका शिरोमणि परम पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने 400 ग्रंथों की रचना करके एक कीर्तिमान स्थापित किया है।

वर्तमान में पिच्छीधारी लगभग 1500 साधुओं में सबसे प्राचीन दीक्षा पूज्य माताजी की है। भगवान महावीर के शासन में पूज्य माताजी ने जिनधर्म की प्रभावना में साहित्य रचना कर, तीर्थों के निर्माण कराकर, भगवन्तों की जन्मभूमियों का विकास कराकर, हस्तिनापुर की पावन धरती पर जैन भूगोल को साकार करके जैन समाज के लिए अमूल्य, प्राचीन कृतियाँ प्रदान की हैं।

मैं अपना परम सौभाग्य मानती हूँ कि ऐसी महान सरस्वती की प्रतिमूर्ति पूज्य माताजी की शिष्या होने का स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ। पूज्य माताजी दीर्घायु हों और अपने ज्ञान से हम सभी को सिंचित करती रहें, इसी मंगल भावना के साथ पूज्य माताजी के पावन चरणों में कोटि-2 नमन।

हार्दिक उद्‌गार

-संघस्थ ब्र. कु. बीना जैन

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रतिक्षण यह भावना रहती है कि किस तरह से भव्यजीवों को धर्ममार्ग में लगाएं। आगम के ज्ञान से ओतप्रोत करें। चौबीस तीर्थंकरों की पंचकल्याणक भूमियों का विकास पूज्य माताजी की प्रेरणा से हो रहा है।

पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा से मांगीतुंगी में भगवान ऋषभदेव की 108 फुट प्रतिमा जो कि वर्तमान में विश्व में सबसे ऊँची प्रतिमा है उसका भव्य पंचकल्याणक 11 से 17 फरवरी 2016 तक हो रहा है। दिव्यशक्ति पूज्य माताजी की प्रेरणा से अनेक स्थानों पर अनेक-अनेक नूतन रचनाओं का निर्माण हुआ है। जिनशासन की प्रभावना में पूज्य माताजी का योगदान अकथनीय है।

इस ऋषभदेव व्रत को करके सभी भव्यजीव सर्वप्रकार की सिद्धि प्राप्त करें। पूज्य माताजी दीर्घायु हों, स्वस्थ रहें। इन्हीं शब्दों के साथ पूज्य माताजी के चरणों में बारम्बार वन्दामि।

विषयानुक्रमणिका

क्र.	पृष्ठ	पृ.
1.	श्री ऋषभदेव व्रत (सर्वसंकटहर एवं सर्वसिद्धिप्रदायक व्रत) (108 व्रत)	9
2.	भगवान श्री ऋषभदेव जिनपूजा	24
3.	श्री ऋषभदेव चरित	32
4.	सर्वदोष निवारण व्रत (18 दोष निवारण 18 व्रत)	40
5.	अर्हंत पूजा	43
6.	श्री ऋषभदेव स्तोत्र	50
7.	सर्वदोष निवारण स्तोत्र (18 दोष निवारण)	52
8.	श्री तीर्थंकर स्तवन (माता के 16 स्वप्न सहित)	58
9.	श्री ऋषभदेव की मंगल आरती	61
10.	भजन-सारे जग में तेरी धूम बाबा हो बाबा	63
11.	भजन-मांगीतुंगी तीर्थ से आमन्त्रण आया है	64

श्री ऋषभदेव व्रत

(सर्वसंकटहर एवं सर्वसिद्धिप्रदायक व्रत)

व्रत की विधि–

जैनधर्म अनादि है अतः तीर्थंकर परंपरा भी अनादि है। फिर भी इस युग की अपेक्षा कर्मभूमि के प्रारंभ में प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव हुये हैं। इन प्रभु का नाम स्मरण ही संपूर्ण पापों का नाश करके महान पुण्य का संचय करने वाला है। इनके व्रतों में प्रभु के 46 मुख्य एवं अन्य गुण तथा 48 प्रकार के उपद्रव–संकट दूर करने के मंत्र हैं जो अत्यधिक महिमापूर्ण हैं। इस व्रत को करने से सर्व संकटों से छुटकारा मिलेगा एवं परंपरा से सर्वसिद्धि प्राप्त होगी।

श्री ऋषभदेव व्रत में 108 व्रत हैं।

46 गुणों के 46 व्रत, अन्य 6 व्रत, सर्वसंकटहर 48 व्रत, सिद्धावस्था के 8 व्रत। इस प्रकार कुल मिलाकर 46 + 6 + 48 + 8 = 108 व्रत हैं। यह व्रत अष्टमी, चतुर्दशी आदि किसी भी तिथि में कभी भी कर सकते हैं।

उत्कृष्ट व्रत विधि में उपवास, मध्यमव्रत में एक

बार अल्पाहार व जघन्यव्रत में दिन में एक बार शुद्ध भोजन–एकाशन करना है। व्रत के दिन भगवान का पंचामृत अभिषेक करके ऋषभदेव की पूजा करें। त्रिकाल में तीन बार व्रत के मंत्र का जाप्य करें। अथवा एक माला समुच्चय मंत्र की व एक माला व्रत के मंत्र की अवश्य करें।

व्रत पूर्ण करके इसका उद्यापन करें। उसमें भगवान ऋषभदेव की छोटी या बड़ी प्रतिमा की प्रतिष्ठा करावें। भगवान ऋषभदेव की जन्मभूमि अयोध्या, दीक्षा व केवलज्ञान भूमि प्रयाग तथा प्रथम आहारभूमि हस्तिनापुर इन तीर्थों की वंदना करें। यदि इतनी शक्ति नहीं हो तो यथाशक्ति उद्यापन करें। उद्यापन में ऋषभदेव समवसरण विधान या ऋषभदेव विधान अवश्य करें।

108 व्रत के जाप्य मंत्र

समुच्चय मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवाय सर्वसिद्धिकराय सर्वसौख्यं कुरु कुरु ह्रीं नमः।

या

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ऋषभदेवाय नमः।

46 गुणों के 46 मंत्र

ॐ ह्रीं निःस्वेदत्वसहजातिशयगुणमंडिताय अतिशायि-सम्यग्दर्शनफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।1।।

ॐ ह्रीं मलरहितसहजातिशयगुणमंडिताय अतिशायि-सम्यग्दर्शनफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।2।।

ॐ ह्रीं क्षीरसमरुधिरसहजातिशयगुणमंडिताय अतिशायि-सम्यग्दर्शनफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।3।।

ॐ ह्रीं वज्रऋषभनाराचसंहननसहजातिशयगुणमंडिताय अतिशायिसम्यग्दर्शनफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।4।।

ॐ ह्रीं समचतुरस्रसंस्थानसहजातिशयगुणमंडिताय अतिशायि-सम्यग्दर्शनफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।5।।

ॐ ह्रीं अनुपमरूपसहजातिशयगुणमंडिताय अतिशायि-सम्यग्दर्शनफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।6।।

ॐ ह्रीं सौगन्ध्यसहजातिशयगुणमंडिताय अतिशायि-सम्यग्दर्शनफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।7।।

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्रशुभलक्षणसहजातिशयगुणमंडिताय अतिशायिसम्यग्दर्शनफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।8।।

ॐ ह्रीं अनंतबलवीर्यसहजातिशयगुणमंडिताय अतिशायि-सम्यग्दर्शनफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।9।।

ॐ ह्रीं प्रियहितमितमधुरवचनसहजातिशयगुणमंडिताय अतिशायिसम्यग्दर्शनफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।10।।

ॐ ह्रीं गव्यूतिशतचतुष्टयसुभिक्षताकेवलज्ञानातिशयगुणमंडिताय अतिशायिसम्यग्ज्ञानफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।11।।

ॐ ह्रीं गगनगमनत्वकेवलज्ञानातिशयगुणमंडिताय अतिशायि-सम्यग्ज्ञानफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।12।।

ॐ ह्रीं प्राणिवधाभावकेवलज्ञानातिशयगुणमंडिताय अतिशायि-सम्यग्ज्ञानफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।13।।

ॐ ह्रीं कवलाहाराभावकेवलज्ञानातिशयगुणमंडिताय अति-शायिसम्यग्ज्ञानफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।14।।

ॐ ह्रीं उपसर्गाभावकेवलज्ञानातिशयगुणमंडिताय अतिशायि-सम्यग्ज्ञानफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।15।।

ॐ ह्रीं चतुर्मुखत्वकेवलज्ञानातिशयगुणमंडिताय अतिशायि-सम्यग्ज्ञानफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।16।।

ॐ ह्रीं छायारहितकेवलज्ञानातिशयगुणमंडिताय अतिशायि–सम्यग्ज्ञानफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।17।।

ॐ ह्रीं पक्ष्मस्पंदरहितकेवलज्ञानातिशयगुणमंडिताय अतिशायि-सम्यग्ज्ञानफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।18।।
ॐ ह्रीं सर्वविद्येश्वरताकेवलज्ञानातिशयगुणमंडिताय अतिशायि-सम्यग्ज्ञानफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।19।।
ॐ ह्रीं नखकेशवृद्धिरहितकेवलज्ञानातिशयगुणमंडिताय अति-शायिसम्यग्ज्ञानफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।20।।
ॐ ह्रीं अक्षरानक्षरात्मकसर्वभाषामयदिव्यध्वनिकेवलज्ञानाति-शयगुणमंडिताय अतिशायिसम्यग्ज्ञानफलप्रदाय श्रीऋषभदेव-तीर्थंकराय नमः।।21।।
ॐ ह्रीं सर्वर्तुफलादिशोभिततरूपरिणाम-देवोपनीतातिशयगुण-मंडिताय अतिशायिसम्यक्चारित्रफलप्रदाय श्रीऋषभदेव-तीर्थंकराय नमः।।22।।
ॐ ह्रीं वायुकुमारोपशमितधूलकंटकादि-देवोपनीतातिशय-गुणमंडिताय अतिशायिसम्यक्चारित्रफलप्रदाय श्रीऋषभ-देवतीर्थंकराय नमः।।23।।
ॐ ह्रीं सर्वजनमैत्रीभावदेवोपनीतातिशयगुणमंडिताय अति-शायिसम्यक्चारित्रफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।24।।
ॐ ह्रीं आदर्शतलप्रतिमारत्नमयीमहीदेवोपनीतातिशयगुण-

मंडिताय अतिशायिसम्यक्चारित्रफलप्रदाय श्रीऋषभदेव-तीर्थंकराय नमः।।25।।
ॐ ह्रीं मेघकुमारकृतगंधोदकवृष्टि-देवोपनीतातिशयगुण-मंडिताय अतिशायिसम्यक्चारित्रफलप्रदाय श्रीऋषभदेव-तीर्थंकराय नमः।।26।।
ॐ ह्रीं फलभारनम्रशालि-देवोपनीतातिशयगुणमंडिताय अतिशायि-सम्यक्चारित्रफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।27।।
ॐ ह्रीं सर्वजनपरमानन्दत्व-देवोपनीतातिशयगुणमंडिताय अतिशायिसम्यक्चारित्रफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।28।।
ॐ ह्रीं अनुकूलविहरणवायुत्व-देवोपनीतातिशयगुणमंडिताय अतिशायिसम्यक्चारित्रफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।29।।
ॐ ह्रीं निर्मलजलपूर्णकूपसरोवरादि-देवोपनीतातिशयगुण-मंडिताय अतिशायिसम्यक्चारित्रफलप्रदाय श्रीऋषभदेव-तीर्थंकराय नमः।।30।।
ॐ ह्रीं शरत्कालवन्निर्मलाकाश-देवोपनीतातिशय-गुणमंडिताय अतिशायिसम्यक्चारित्रफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।31।।

ॐ ह्रीं सर्वजनरोगशोकबाधारहितत्व-देवोपनीतातिशय-गुणमंडिताय अतिशायिसम्यक्चारित्रफलप्रदाय श्रीऋषभदेव-तीर्थंकराय नमः।।32।।
ॐ ह्रीं यक्षेन्द्रमस्तकोपरिस्थितधर्मचक्रचतुष्टय-देवोपनीताति-शयगुणमंडिताय अतिशायिसम्यक्चारित्रफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।33।।
ॐ ह्रीं तीर्थंकरदेवचरणकमलतलस्वर्णकमलरचना-देवोपनी-तातिशयगुणमंडिताय अतिशायिसम्यक्चारित्रफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।34।।
ॐ ह्रीं अशोकवृक्षमहाप्रातिहार्यगुणमंडिताय वरप्रातिहार्य-शोभनफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।35।।
ॐ ह्रीं छत्रत्रयमहाप्रातिहार्यगुणमंडिताय वरप्रातिहार्य-शोभनफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।36।।
ॐ ह्रीं सिंहासनमहाप्रातिहार्यगुणमंडिताय वरप्रातिहार्य-शोभनफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।37।।
ॐ ह्रीं द्वादशगणपरिवेष्टितमहाप्रातिहार्यगुणमंडिताय वरप्राति-हार्यशोभनफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।38।।
ॐ ह्रीं देवदुंदुभिमहाप्रातिहार्यगुणमंडिताय वरप्रातिहार्य-शोभनफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।39।।

ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टिमहाप्रातिहार्यगुणमंडिताय वरप्रातिहार्य-शोभनफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।40।।
ॐ ह्रीं भामण्डलमहाप्रातिहार्यगुणमंडिताय वरप्रातिहार्य-शोभनफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।41।।
ॐ ह्रीं चतुःषष्टिचामरमहाप्रातिहार्यगुणमंडिताय वरप्राति-हार्यशोभनफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।42।।
ॐ ह्रीं अनंतज्ञानगुणसमन्विताय तथैवफलप्रदाय श्रीऋषभदेव-तीर्थंकराय नमः।।43।।
ॐ ह्रीं अनंतदर्शनगुणसमन्विताय तथैवफलप्रदाय श्रीऋषभदेव-तीर्थंकराय नमः।।44।।
ॐ ह्रीं अनंतसौख्यगुणसमन्विताय तथैवफलप्रदाय श्रीऋषभदेव-तीर्थंकराय नमः।।45।।
ॐ ह्रीं अनंतवीर्यगुणसमन्विताय तथैवफलप्रदाय श्रीऋषभदेव-तीर्थंकराय नमः।।46।।

अन्य 6 व्रत के 6 मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीऋषभसेनादिचतुरशीतिगणधरगुरुवंदितपादपद्माय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।1।।
ॐ ह्रीं चतुरशीतिसहस्रऋषिगणवंदितपादपद्माय श्रीऋषभदेव-तीर्थंकराय नमः।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीब्राह्मीगणिनीप्रमुखत्रयलक्षपंचाशत्सहस्रार्यिकावंदितपादपद्माय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।3।।
ॐ ह्रीं गोमुखयक्षचक्रेश्वरीयक्षीशासनदेवदेवीवंदित-पादपद्माय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।4।।
ॐ ह्रीं असंख्यातदेवदेवीवंदितपादपद्माय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।5।।
ॐ ह्रीं त्रिलक्षश्रावकपंचलक्षश्राविकावंदितपादपद्माय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।6।।

सर्वसंकटहर 48 मंत्र

ॐ ह्रीं अतिवृष्टि-उपद्रवनाशनसमर्थाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।1।।
ॐ ह्रीं अनावृष्टि-उपद्रवनाशनसमर्थाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।2।।
ॐ ह्रीं दुर्भिक्षोपद्रवनाशनसमर्थाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।3।।
ॐ ह्रीं चोरलुंटकादि-उपद्रवनिवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।4।।
ॐ ह्रीं आयकरादिराज्यभयोपद्रवनिवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः। ।5।।

ॐ ह्रीं दारिद्रदुःखविनाशकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।6।।
ॐ ह्रीं ज्वरशूलरोगादिनिवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।7।।
ॐ ह्रीं कामलाकुष्ठजलोदरभगंदरादिव्याधिनाशकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः ।।8।।
ॐ ह्रीं नानाविधनेत्ररोगविनाशकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।9।।
ॐ ह्रीं प्राणघातिकैन्सरमहाव्याधिविनाशकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।10।।
ॐ ह्रीं हृदयरोगपीड़ानिवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।11।।
ॐ ह्रीं कुरूपादिकष्टनिवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।12।।
ॐ ह्रीं प्राणघातक-इष्टवियोगजदुःखनाशकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।13।।
ॐ ह्रीं अनिष्टसंयोगमहादुःखशातनाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।14।।
ॐ ह्रीं सर्वमानसिककष्टविनाशकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।15।।

ॐ ह्रीं सर्ववाचनिककष्टनिवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।16।।
ॐ ह्रीं नानाविधकायिककष्टशातनाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।17।।
ॐ ह्रीं सर्ववायुयानदुर्घटनाकष्टनिवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः। ।18।।
ॐ ह्रीं सर्वलौहपथगामिनीदुर्घटनादिभयनिवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।19।।
ॐ ह्रीं सर्वचतुष्चक्रिकादुर्घटनादिसंकटमोचनाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।20।।
ॐ ह्रीं सर्वत्रिचक्रिकादुर्घटनादिकष्टनिवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।21।।
ॐ ह्रीं सर्वद्विचक्रिकादुर्घटनातंकनिवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।22।।
ॐ ह्रीं भूकम्पदुर्घटनानिवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।23।।
ॐ ह्रीं नदीपूरप्रवाहसंकटमोचनाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।24।।
ॐ ह्रीं नदीसमुद्रादिपतनकष्टनिवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।25।।

ॐ ह्रीं वृश्चिकसर्पादिविषधरनिर्णाशनाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।26।।
ॐ ह्रीं अष्टापदव्याघ्रसिंहादिक्रूरहिंसकजंतुभयनिवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।27।।
ॐ ह्रीं गजाश्वगोवृषभादिप्राणिगणभयविनाशकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।28।।
ॐ ह्रीं विषाक्तवाष्पक्षरणादिसंकटनिवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।29।।
ॐ ह्रीं वाष्पचुल्लिकादिदुर्घटनाकष्टनिवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।30।।
ॐ ह्रीं बमविस्फोटकादि-आकस्मिकसंकटनिवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।31।।
ॐ ह्रीं आतंकवादिजनकृत-आकस्मिकमरणादिभयविनाशकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।32।।
ॐ ह्रीं कुसंतानकष्टनिवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।33।।
ॐ ह्रीं कूपनदीपतनविषादिभक्षणनिमित्तापघातभावनिवारणाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।34।।

ॐ ह्रीं नानाविधदुर्घटनादिभिरकालमृत्युनिवारणाय श्रीऋषभदेव-तीर्थंकराय नमः।।35।।
ॐ ह्रीं भूतपिशाचव्यंतरादिबाधानिवारकाय श्रीऋषभदेव-तीर्थंकराय नमः।।36।।
ॐ ह्रीं बहुविधव्यापारसफलताकारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।37।।
ॐ ह्रीं उभयकुलकमलविकासिनी-धर्मपत्नीप्रापकपुण्यप्रदायकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।38।।
ॐ ह्रीं पुत्रपौत्रादिकुलदीपकसंततिप्रापकपुण्यप्रदायकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।39।।
ॐ ह्रीं दीर्घायुप्रापकपुण्यप्रदायकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।40।।
ॐ ह्रीं चतुर्दिक्कीर्तिसौरभव्यापकपुण्यप्रापकाय श्रीऋषभदेव-तीर्थंकराय नमः।।41।।
ॐ ह्रीं राज्यमान्यतादिप्रशंसनगुणप्रापकपुण्यप्रदायकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।42।।
ॐ ह्रीं आज्ञापालनविभवप्रदायकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।43।।
ॐ ह्रीं अन्त्यसमाधिमरणफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।44।।

ॐ ह्रीं व्यवहारनिश्चयरत्नत्रयप्रदायकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।45।।
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशधर्मप्रदायकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।46।।
ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिसोलहकारणभावनाफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।47।।
ॐ ह्रीं अन्तरात्मस्वरूपनिजशुद्धात्मध्यानकारिपदप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।48।।

सिद्धावस्था के 8 मंत्र

ॐ ह्रीं मोहनीयकर्मविघातकाय तथैवकर्मनाशनशक्तिप्रदाय सम्यक्त्वगुणसहिताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।1।।
ॐ ह्रीं ज्ञानावरणकर्मविघातकाय तथैवकर्मनाशनशक्तिप्रदाय ज्ञानगुणसहिताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।2।।
ॐ ह्रीं दर्शनावरणकर्मविघातकाय तथैवकर्मनाशनशक्तिप्रदाय दर्शनगुणसहिताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।3।।
ॐ ह्रीं अन्तरायकर्मविघातकाय तथैवकर्मनाशनशक्तिप्रदाय वीर्यगुणसहिताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।4।।
ॐ ह्रीं नामकर्मविघातकाय तथैवकर्मनाशनशक्तिप्रदाय सूक्ष्मगुणसहिताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।5।।

ॐ ह्रीं आयुकर्मविघातकाय तथैवकर्मनाशनशक्तिप्रदाय अवगाहनगुणसहिताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।6।।
ॐ ह्रीं गोत्रकर्मविघातकाय तथैवकर्मनाशनशक्तिप्रदाय अगुरुलघुगुणसहिताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।7।।
ॐ ह्रीं वेदनीयकर्मविघातकाय तथैवकर्मनाशनशक्तिप्रदाय अब्याबाधगुणसहिताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।।8।।

श्री शांतिसागर! मुनीन्द्र! नमोऽस्तु तुभ्यं,
सूरिस्त्वमेव प्रथमः किल संप्रतीह।
पट्टाधिपः प्रथम एव च यः प्रसिद्धः,
तं वीरसागर गुरुं प्रणमामि भक्त्या।।१।।
-गणिनी ज्ञानमती

भगवान श्री ऋषभदेव जिनपूजा

स्थापना- गीता छंद

हे आदिब्रह्मा! युगपुरुष! पुरुदेव! युगस्रष्टा तुम्हीं।
युग आदि में इस कर्मभूमी, के प्रभो! कर्ता तुम्हीं।।
तुम ही प्रजापतिनाथ! मुक्ती के विधाता हो तुम्हीं।
मैं आपका आह्वान करता, नाथ! अब तिष्ठो यहीं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टकं -चाल -नंदीश्वर पूजा

जिनवच सम शीतल नीर, कंचन भृंग भरूँ।
जिन चरणांबुज में धार, दे जगद्वंद्व हरूँ।।
श्री आदिनाथ जिनराज, आदी तीर्थंकर।
मैं पूजूँ भक्ति समेत, तुमको क्षेमंकर।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनतनु सम सुरभित गंध, सुवरण पात्र भरूँ।
जिनचरण सरोरुह चर्च, भव संताप हरूँ।।श्री.।।2।।
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन गुणसम उज्ज्वल धौत, अक्षत थाल भरे।
जिन चरण निकट धर पुंज, अक्षय सौख्य भरे।।श्री.।।3।।
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनयशसम सुरभित श्वेत, कुंद गुलाब लिये।
मदनारिजयी जिनपाद, पूजूँ हर्ष हिये।।श्री.।।4।।
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवचनामृत सम शुद्ध, व्यंजन थाल भरे।
परमामृत तृप्त जिनेन्द्र, पूजत भूख टरे।।श्री.।।5।।
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वरभेद ज्ञान सम ज्योति,जगमग दीप लिये।
जिनपद पूजत ही होत, ज्ञान उद्योत हिये।।श्री.।।6।।
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध सुगंधित धूप, खेवत कर्म जरे।
निज आतम गुण सौगंध्य, दश दिश माहिं भरे।।श्री.।।7।।
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन ध्वनिसम मधुर रसाल, आम अनार भले।
जिनपद पूजत तत्काल, फल सर्वोच्च मिले।।श्री.।।8।।
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

ले अष्ट द्रव्य का थाल, अर्घ्य सम चढ़ाऊँ मैं।
कैवल्य 'ज्ञानमति' हेतु, तुम गुण गाऊँ मैं।।श्री.।।9।।
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

सरयूनदी सुनीर, जिनपद पंकज धार दे।
शीघ्र हरो भव पीर, शांतीधारा शांतिकर।।10।।
शांतये शांतिधारा।

बेला कमल गुलाब, चंप चमेली ले घने।
आदीश्वर पादाब्ज, पूजत ही सुख संपदा।।11।।
दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

—शंभु छंद —

यह पुरी अयोध्या इंद्र रचित, चौदहवें कुलकर नाभिराज।
माता मरुदेवी के आँगन, बहु रत्न वृष्टि की धनदराज।।
आषाढ़ वदी द्वितीया सर्वारथ, सिद्धी से अहमिंद्र देव।
माता के गर्भ बसे आकर, इंद्रों ने की पितु मात सेव।।
ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाद्वितीयायां श्रीआदिनाथजिनगर्भ–कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री ह्री धृति आदि देवियों ने, माता की सेवा भक्ती की।
नाना विध गूढ़ प्रश्न करके, माता की अतिशय तृप्ती की।।
शुभ चैत्र वदी नवमी जन्में, प्रभु त्रिभुवन में अति हर्ष हुआ।
इन्द्रों ने आ प्रभु को लेकर, मेरू पर अतिशय न्हवन किया।।
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णानवम्यां श्रीआदिनाथजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुरुदेव निलांजना नृत्य देख, वैराग्यभाव मन में लाये।
लौकांतिक सुर स्तुति करते, सुर सुदर्शना पालकि लाये।।
नक्षत्र उत्तराषाढ़ चैत वदि, नवमी प्रभु सिद्धार्थ वन में।
छह मास योग ले दीक्षा ली, मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ प्रभु पद में।।
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां श्रीआदिनाथजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छह मास योग के बाद प्रभू, मुनिचर्या बतलाने निकले।
गजपुर में अक्षयतृतिया को, आहार दिया श्रेयांस मिले।।
इक सहस वर्ष तप तपने से, केवलज्ञानी होकर चमके।
दिव्यध्वनि से जग संबोधा, फाल्गुन वदि एकादशि तिथि के।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाएकादश्यां श्रीआदिनाथजिनकेवल-ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बारह विध सभा बनी सुंदर, मुनि आर्या सुरनर पशुगण थे।
प्रभु समवसरण में वृषभसेन, आदिक चौरासी गणधर थे।।
तीजे युग में त्रय वर्ष सार्ध, अरु मासशेष अष्टापद से।
चौदह दिन योग निरुद्ध माघ, वदि चौदश के प्रभु मुक्ति बसे।।
ॐ ह्रीं माघकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीआदिनाथजिनमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य (दोहा) –

चिन्मय चिन्तामणि प्रभो! ऋषभदेव भगवान।
पूर्ण अर्घ्य लेकर जजूँ, मिले सिद्ध स्थान।।6।।
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथपंचकल्याणकाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य–ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

–दोहा –

तीर्थंकर गुण रत्न को, गिनत न पावें पार।
तीन रत्न के हेतु मैं, नमूँ अनंतों बार।।1।।

–शंभु छंद –

श्री वृषभसेन आदिक चौरासी, गणधर मुनि चौरासि सहस।
ब्राह्मी गणिनी त्रय लाख पचास, हजार आर्यिका व्रतसंयुत।।
त्रय लाख सुश्रावक पाँच लाख, श्राविका प्रभू का चउ संघ था।
आयू चौरासी लाख पूर्व, वत्सर व पाँच सौ धनु तनु था।।2।।

– अनंगशेखर छंद–

जयो जिनेन्द्र! आपके महान दिव्य ज्ञान में,
त्रिलोक और त्रिकाल एक साथ भासते रहे।
जयो जिनेन्द्र! आपका अपूर्व तेज देखके,
असंख्य सूर्य और चंद्रमा भि लाजते रहे।।
जयो जिनेन्द्र! आपकी ध्वनी अनच्छरी खिरे,
तथापि संख्य भाषियों को बोध है करा रही।
जयो जिनेन्द्र! आपका अचिन्त्य ये महात्म्य देख,
सुभक्ति से प्रजा समस्त आप आप आ रही।।3।।

जिनेश! आपकी सभा असंख्य जीव से भरी,
अनंत वैभवों समेत भव्य चित्त मोहती।
जिनेश! आपके समीप साधु वृंद औ गणीन्द्र,
केवली मुनीन्द्र और आर्यिकायें शोभतीं।।
सुरेन्द्र देवियों की टोलियाँ असंख्य आ रही,
खगेश्वरों की पक्तियाँ अनेक गीत गा रहीं।
सुभूमि गोचरी मनुष्य नारियाँ तमाम हैं,
पशू तथैव पक्षियों कि टोलियाँ भी आ रहीं।।4।।

सुबारहों सभा स्वकीय ही स्वकीय में रहें,
असंख्य भव्य बैठ के जिनेश देशना सुनें।
सुतत्त्व सात नौ पदार्थ पाँच अस्तिकाय और,
द्रव्य छह स्वरूप को भले प्रकार से गुनें।।
निजात्म तत्त्व को संभाल तीन रत्न से निहाल,
बार-बार भक्ति से मुनीश हाथ जोड़ते।
अनंत सौख्य में निमित्त आपको विचार के,
अनंत दुःख हेतु जान कर्मबंध तोड़ते।।5।।

स्वमोह बेल को उखाड़ मृत्युमल्ल को पछाड़,
मुक्ति अंगना निमित्त लोक शीश जा बसें।

प्रसाद से हि आपके अनंत भव्य जीव राशि,
आपके समान होय आप पास आ लसें।।
असंख्य जीव मात्र दृष्टि समीचीन पायके,
अनंतकाल रूप पंच परावर्त मेटते।
सुभक्ति के प्रभाव से असंख्य कर्म निर्जरा,
करें अनंत शुद्धि से निजात्म सौख्य सेवते।।6।।

–दोहा –

वृषभ चिह्न स्वर्णिम तनू, प्रथम तीर्थकर आप।
'ज्ञानमती' सुख शांति दे, करो हमें निष्पाप।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। **शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।**

–दोहा –

नाथ! आप गुणसिंधु हैं, को कहि पावे पार।
नाममंत्र ही आपका, करे भवोदधि पार।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

श्री ऋषभदेव चरित

ऋषभदेव का गर्भावतार–

भगवान के गर्भ में आने के छह महीने पहले इन्द्र की आज्ञा से कुबेर ने माता के आंगन में साढ़े सात करोड़ रत्नों की वर्षा की थी। किसी दिन रात्रि के पिछले प्रहर में रानी मरुदेवी ने ऐरावत हाथी, शुभ्र बैल, हाथियों द्वारा स्वर्ण घटों से अभिषिक्त लक्ष्मी, पुष्पमाला आदि सोलह स्वप्न देखे। प्रातः पतिदेव से स्वप्न का फल सुनकर अत्यन्त हर्षित हुईं। उस समय अवसर्पिणी काल के सुषमा दुःषमा नामक तृतीय काल में चौरासी लाख पूर्व तीन वर्ष, आठ मास और एक पक्ष शेष रहने पर आषाढ़ कृष्ण द्वितीया के दिन उत्तराषाढ़ नक्षत्र में वज्रनाभि अहमिन्द्र देवायु का अन्त होने पर सर्वार्थसिद्धि विमान से च्युत होकर मरुदेवी के गर्भ में अवतीर्ण हुए। उस समय इन्द्र ने आकर गर्भकल्याणक महोत्सव मानाया। इन्द्र की आज्ञा से श्री, ह्री आदि देवियाँ और दिक्कुमारियाँ माता की सेवा करते हुए काव्यगोष्ठी, सैद्धान्तिक चर्चाओं से और गूढ़ प्रश्नों से माता का मन अनुरंजित करने लगीं।

ऋषभदेव का जन्म महोत्सव–

नव महीने व्यतीत होने पर माता मरुदेवी ने चैत्र कृष्ण नवमी के दिन सूर्योदय के समय मति–श्रुत–अवधि इन तीनों ज्ञान से सहित भगवान को जन्म दिया। सारे विश्व में हर्ष की लहर दौड़ गई। इन्द्रों के आसन कम्पित होने से, कल्पवृक्षों से पुष्पवृष्टि होने से एवं चतुर्निकाय देवों के यहाँ घंटा ध्वनि, शंखनाद आदि बाजों के बजने से भगवान का जन्म हुआ है ऐसा समझकर सौधर्म इन्द्र ने इन्द्राणी सहित ऐरावत हाथी पर चढ़कर नगर की प्रदक्षिणा करके भगवान को सुमेरु पर्वत पर ले जाकर 1008 कलशों से क्षीरसमुद्र के जल से भगवान का जन्माभिषेक किया। अनन्तर वस्त्राभरणों से अलंकृत करके 'ऋषभदेव' यह नाम रखा। इन्द्र अयोध्या में वापस आकर स्तुति, पूजा, तांडव नृत्य आदि करके स्वस्थान को चले गये।

ऋषभदेव का विवाहोत्सव–

भगवान के युवावस्था में प्रवेश करने पर महाराजा नाभिराज ने बड़े ही आदर से भगवान की स्वीकृति प्राप्त कर इन्द्र की अनुमति से कच्छ, सुकच्छ राजाओं की बहन 'यशस्वती', 'सुनन्दा' के साथ श्री ऋषभदेव का विवाह सम्पन्न कर दिया।

भरत चक्रवर्ती आदि का जन्म–

यशस्वती देवी ने चैत्र कृष्ण नवमी के दिन भरत चक्रवर्ती को जन्म दिया तथा क्रमशः सौ पुत्र एवं ब्राह्मी कन्या को जन्म दिया। दूसरी सुनन्दा महादेवी ने कामदेव भगवान बाहुबली और सुन्दरी नाम की कन्या को जन्म दिया। इस प्रकार एक सौ तीन पुत्र, पुत्रियों सहित भगवान ऋषभदेव, देवों द्वारा लाये गये भोग पदार्थों का अनुभव करते हुए गृहस्थ जीवन व्यतीत कर रहे थे।

भगवान द्वारा पुत्र–पुत्रियों का विद्याध्ययन–

भगवान ऋषभदेव गर्भ से ही अवधिज्ञानधारी होने से स्वयं गुरु थे। किसी समय भगवान ब्राह्मी-सुन्दरी को गोद में लेकर उन्हें आशीर्वाद देकर चित्त में स्थित श्रुतदेवता को सुवर्णपट्ट पर स्थापित कर 'सिद्धं नमः' मंगलाचरणपूर्वक दाहिने हाथ से 'अ, आ' आदि वर्णमाला लिखकर ब्राह्मी कुमारी को लिपि लिखने का एवं बायें हाथ से सुन्दरी को अनुक्रम के द्वारा इकाई, दहाई आदि अंक विद्या को लिखने का उपदेश दिया था। इसी प्रकार भगवान ने अपने भरत, बाहुबली आदि सभी पुत्रों को सभी विद्याओं का अध्ययन कराया था।

असि-मसि आदि षट्क्रियाओं का उपदेश–

काल प्रभाव से कल्पवृक्षों के शक्तिहीन हो जाने पर एवं बिना बोये धान्य के ही विरल हो जाने पर व्याकुल हुई प्रजा नाभिराज के पास गई। अनन्तर नाभिराज की आज्ञा से प्रजा भगवान ऋषभदेव के पास आकर रक्षा की प्रार्थना करने लगी।

प्रजा के दीन वचन सुनकर भगवान ऋषभदेव अपने मन में सोचने लगे कि पूर्व–पश्चिम विदेह में जो स्थिति वर्तमान है वही स्थिति आज यहाँ प्रवृत्त करने योग्य है। उसी से यह प्रजा जीवित रह सकती है। वहां जैसे असि, मषि आदि षट्कर्म हैं, क्षत्रिय आदि वर्ण व्यवस्था, ग्राम–नगर आदि की रचना है वैसे ही यहां भी होना चाहिये। अनन्तर भगवान ने इन्द्र का स्मरण किया और स्मरणमात्र से इन्द्र ने आकर अयोध्यापुरी के बीच में जिनमंदिर की रचना करके चारों दिशाओं में जिनमन्दिर बनाये। कौशल, अंग, बंग आदि देश नगर बनाकर प्रजा को बसाकर प्रभु की आज्ञा से इन्द्र स्वर्ग को चला गया। भगवान ने प्रजा को असि, मषि, कृषि, विद्या, वाणिज्य और शिल्प इन छह कर्मों का उपदेश दिया। उस समय भगवान सरागी थे।

क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन तीन वर्णों की स्थापना की और अनेकों पाप रहित आजीविका के उपाय बताये। इसीलिये भगवान युगादिपुरुष, आदिब्रह्मा, विश्वकर्मा, स्रष्टा, कृतयुग विधाता और प्रजापति आदि कहलाये। उस समय इन्द्र ने भगवान का साम्राज्य पद पर अभिषेक कर दिया।

भगवान का वैराग्य और दीक्षा महोत्सव–

किसी समय सभा में नीलांजना के नृत्य को देखते हुए बीच में उसकी आयु के समाप्त होने से भगवान को वैराग्य हो गया। भगवान ने भरत का राज्याभिषेक करते हुए इस पृथ्वी को 'भारत' इस नाम से सनाथ किया और बाहुबली को युवराज पद पर स्थापित किया। भगवान महाराज नाभिराज आदि को पूछकर इन्द्र द्वारा लाई गई 'सुदर्शना' नामक पालकी पर आरूढ़ होकर 'सिद्धार्थक' वन में पहुँचे और वटवृक्ष के नीचे बैठकर 'ऊँ नमः सिद्धेभ्यः मन्त्र का उच्चारण कर पंचमुष्टि केशलोंच करके सर्व परिग्रह रहित मुनि हो गये। उस स्थान की इन्द्रों ने पूजा की थी इसीलिये उसका 'प्रयाग' यह नाम प्रसिद्ध हो गया अथवा भगवान ने वहां प्रकृष्टरूप से त्याग किया था इसीलिये भी उसका नाम प्रयाग हो गया था। उसी समय भगवान ने छह

महीने का योग ले लिया। भगवान के साथ आये हुए चार हजार राजाओं ने भी भक्तिवश नग्न मुद्रा धारण कर ली।

पाखंड मत की उत्पत्ति–

भागवान के साथ दीक्षित हुए राजा लोग दो–तीन महीने में ही क्षुधा, तृषा आदि से पीड़ित होकर अपने हाथ से वन के फल आदि ग्रहण करने लगे। इस क्रिया को देख वन देवताओं ने कहा कि मूर्खों ! यह दिगम्बर वेष सर्वश्रेष्ठ अरहंत, चक्रवर्ती आदि के द्वारा धारण करने योग्य है। तुम लोग इस वेष में अनर्गल प्रवृत्ति मत करो। यह सुनकर उन लोगों ने भ्रष्ट हुये तपस्वियों के अनेकों रूप बना लिये, वल्कल, चीवर, जटा, दण्ड आदि धारण करके वे पारिव्राजक आदि बन गये। भगवान ऋषभदेव का पौत्र मरीचिकुमार इनमें अग्रणी गुरु परिव्राजक बन गया। ये मरीचि कुमार आगे चलकर अंतिम तीर्थंकर महावीर हुए हैं।

भगवान का आहार ग्रहण–

जगद्गुरु भगवान छह महीने बाद आहार को निकले परन्तु चर्यावधि किसी को मालूम न होने से सात माह नौ दिन और व्यतीत हो गये अतः एक वर्ष उनतालीस दिन

बाद भगवान कुरुजांगल देश के हस्तिनापुर नगर में पहुंचे। भगवान को आते देख राजा श्रेयांस को पूर्व भव का स्मरण हो जाने से राजा सोमप्रभ के साथ श्रेयांसकुमार ने विधिवत् पड़गाहन आदि करके नवधाभक्ति से भगवान को इक्षुरस का आहार दिया। वह दिन वैशाख शुक्ला तृतीया का था जो आज भी 'अक्षय तृतीया' के नाम से प्रसिद्ध है।

भगवान को केवलज्ञान की प्राप्ति–

हजार वर्ष तपश्चरण करते हुए भगवान को पूर्वतालपुर (पुरिमतालपुर) के उद्यान में–प्रयाग में वटवृक्ष के नीचे ही फाल्गुन कृष्णा एकादशी के दिन केवलज्ञान प्रकट हो गया। इन्द्र की आज्ञा से कुबेर ने बारह योजन प्रमाण समवसरण की रचना की। समवसरण में बारह सभाओं में क्रम से 1. सप्तऋद्धि समन्वित गणधर देव और मुनिजन 2. कल्पवासी देवियाँ 3. आर्यिकायें और श्राविकायें 4. भवनवासी देवियाँ 5. व्यन्तर देवियाँ 6. ज्योतिष्क देवियाँ 7. भवनवासी देव 8. व्यन्तर देव 9. ज्योतिष्क देव 10. कल्पवासी देव 11. मनुष्य और 12. तिर्यंच बैठकर उपदेश सुनते थे। पुरिमताल नगर के राजा श्री ऋषभदेव भगवान के पुत्र ऋषभसेन प्रथम गणधर हुए। ब्राह्मी भी आर्यिका दीक्षा लेकर आर्यिकाओं में प्रधान

गणिनी हो गयी। भगवान के समवसरण में 84 गणधर, 84000 मुनि, 350000 आर्यिकायें, 300000 श्रावक, 500000 श्राविकायें, असंख्यातों देव-देवियाँ और संख्यातों तिर्यंच उपदेश सुनते थे।

ऋषभदेव का निर्वाण–

जब भगवान की आयु चौदह दिन शेष रही तब कैलाश पर्वत पर जाकर योगों का निरोध कर माघ कृष्ण चतुर्दशी के दिन सूर्योदय के समय भगवान पूर्व दिशा की ओर मुँह करके अनेक मुनियों के साथ सर्वकर्मों का नाशकर एक समय में सिद्धलोक में जाकर विराजमान हो गये। उसी क्षण इन्द्रों ने आकर भगवान का निर्वाण कल्याणक महोत्सव मनाया था, ऐसे ऋषभदेव जिनेन्द्र सदैव हमारी रक्षा करें।

स्वास्थ्य मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं आरोग्यलाभं कुरु कुरु स्वाहा।

सर्वदोषनिवारण व्रत

(18 दोष निवारण 18 व्रत)

तीर्थंकर भगवान के अथवा अन्य महापुरुषों के 4 घातिकर्म के नष्ट होने के बाद केवलज्ञान प्रगट हो जाता है तब उनके क्षुधा, तृषा आदि 18 दोष नहीं रहते हैं। उन 18 दोषों में ही अनंतदोष समाविष्ट हैं, अतः इन 18 दोषों को दूर करने के लिये अर्थात् केवलज्ञान की प्राप्ति के लिये यह व्रत करना चाहिये। इस व्रत के प्रभाव से तात्कालिक भी रोग, शोक आदि दूर होते हैं एवं परंपरा से कर्मों का नाश करके मोक्ष प्राप्त करने की शक्ति जाग्रत होती है। इस व्रत में अर्हंतदेव की पूजा करें। यह व्रत अष्टमी, चतुर्दशी आदि किसी भी तिथि में कर सकते हैं।

व्रत पूर्ण होने पर अपनी शक्ति के अनुसार उद्यापन करें। उद्यापन में अर्हंत परमेष्ठी विधान अथवा पंचपरमेष्ठी विधान अवश्य करें।

समुच्चय मंत्र

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहिताय तथैवदोषनाशनसमर्थाय श्री अर्हत्परमेष्ठिने नमः।

18 दोष निवारण के 18 मंत्र

ॐ ह्रीं क्षुधामहादोषरहिताय तथैवदोषनाशनसमर्थाय श्री अर्हत्परमेष्ठिने नमः।।1।।

ॐ ह्रीं तृषामहादोषरहिताय तथैवदोषनाशनसमर्थाय श्री अर्हत्परमेष्ठिने नमः।।2।।

ॐ ह्रीं भयमहादोषरहिताय तथैवदोषनाशनसमर्थाय श्री अर्हत्परमेष्ठिने नमः।।3।।

ॐ ह्रीं क्रोधमहादोषरहिताय तथैवदोषनाशनसमर्थाय श्री अर्हत्परमेष्ठिने नमः।।4।।

ॐ ह्रीं चिंतामहादोषरहिताय तथैवदोषनाशनसमर्थाय श्री अर्हत्परमेष्ठिने नमः।।5।।

ॐ ह्रीं जरामहादोषरहिताय तथैवदोषनाशनसमर्थाय श्री अर्हत्परमेष्ठिने नमः।।6।।

ॐ ह्रीं रागमहादोषरहिताय तथैवदोषनाशनसमर्थाय श्री अर्हत्परमेष्ठिने नमः।।7।।

ॐ ह्रीं मोहमहादोषरहिताय तथैवदोषनाशनसमर्थाय श्री अर्हत्परमेष्ठिने नमः।।8।।

ॐ ह्रीं रोगमहादोषरहिताय तथैवदोषनाशनसमर्थाय श्री अर्हत्परमेष्ठिने नमः।।9।।

ॐ ह्रीं मृत्युमहादोषरहिताय तथैवदोषनाशनसमर्थाय श्री अर्हत्परमेष्ठिने नमः।।10।।

ॐ ह्रीं स्वेदमहादोषरहिताय तथैवदोषनाशनसमर्थाय श्री अर्हत्परमेष्ठिने नमः।।11।।

ॐ ह्रीं विषादमहादोषरहिताय तथैवदोषनाशनसमर्थाय श्री अर्हत्परमेष्ठिने नमः।।12।।

ॐ ह्रीं मदमहादोषरहिताय तथैवदोषनाशनसमर्थाय श्री अर्हत्परमेष्ठिने नमः।।13।।

ॐ ह्रीं रतिमहादोषरहिताय तथैवदोषनाशनसमर्थाय श्री अर्हत्परमेष्ठिने नमः।।14।।

ॐ ह्रीं विस्मयमहादोषरहिताय तथैवदोषनाशनसमर्थाय श्री अर्हत्परमेष्ठिने नमः।।15।।

ॐ ह्रीं निद्रामहादोषरहिताय तथैवदोषनाशनसमर्थाय श्री अर्हत्परमेष्ठिने नमः।।16।।

ॐ ह्रीं जन्ममहादोषरहिताय तथैवदोषनाशनसमर्थाय श्री अर्हत्परमेष्ठिने नमः।।17।।

ॐ ह्रीं अरतिमहादोषरहिताय तथैवदोषनाशनसमर्थाय श्री अर्हत्परमेष्ठिने नमः।।18।।

अर्हंत पूजा

—स्थापना-गीताछन्द —

अरिहंत प्रभु ने घातिया को, घात निज सुख पा लिया।
छ्यालीस गुण के नाथ अठरह, दोष का सब क्षय किया।।
शत इन्द्र नित पूजें उन्हें, गणधर मुनी वंदन करें।
हम भी प्रभो! तुम अर्चना, के हेतु अभिनंदन करें।।1।।

—दोहा —

दोष रहित निर्दोष जिन, वीतराग सर्वज्ञ।
हित उपदेशी देव को, जजत बनूं आत्मज्ञ।।2।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठिसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठिसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ स्थापनं।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठिसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-स्रग्विणी छंद

साधु के चित्त सम स्वच्छ जल ले लिया।
कर्ममल क्षालने तीन धारा किया।।

सर्व अरिहंत को पूजहूँ भक्ति से।
कर्म अरि को हनूँ भक्ति की युक्ति से।।1।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठिभ्यः जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध सौगंध्य से नाथ को पूजते।
सर्व संताप से भव्यजन छूटते।।
सर्व अरिहंत को पूजहूँ भक्ति से।
कर्म अरि को हनूँ भक्ति की युक्ति से।।2।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठिभ्यः संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धौत अक्षत लिये स्वर्ण के थाल में।
पुंज धर के जजूँ नाय के भाल मैं।।
सर्व अरिहंत को पूजहूँ भक्ति से।
कर्म अरि को हनूँ भक्ति की युक्ति से।।3।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठिभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

केतकी कुंद मचकुंद बेला लिये।
कामहर नाथ के पाद अर्पण किये।।

सर्व अरिहंत को पूजहूँ भक्ति से।
कर्म अरि को हनूँ भक्ति की युक्ति से।।4।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठिभ्यः कामबाण-विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मुद्ग मोदक इमरती भरे थाल में।
आत्म सुख हेतु मैं अर्पहूँ हाल में।।
सर्व अरिहंत को पूजहूँ भक्ति से।
कर्म अरि को हनूँ भक्ति की युक्ति से।।5।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठिभ्यः क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण के दीप में ज्योति कर्पूर की।
नाथ पाद पूजते मोह तम चूरती।।
सर्व अरिहंत को पूजहूँ भक्ति से।
कर्म अरि को हनूँ भक्ति की युक्ति से।।6।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठिभ्यः मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप को अग्नि में खेवते शीघ्र ही।
कर्म शत्रू जलें सौख्य हो शीघ्र ही।।

सर्व अरिहंत को पूजहूँ भक्ति से।
कर्म अरि को हनूँ भक्ति की युक्ति से।।7।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठिभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेव अँगूर दाड़िम अनन्नास ले।
मोक्ष फल हेतु जिन पाद पूजूँ भले।।
सर्व अरिहंत को पूजहूँ भक्ति से।
कर्म अरि को हनूँ भक्ति की युक्ति से।।8।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठिभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य लेकर जजूँ नाथ को आज मैं।
स्वात्म संपत्ति का पाऊँ साम्राज मैं।।
सर्व अरिहंत को पूजहूँ भक्ति से।
कर्म अरि को हनूँ भक्ति की युक्ति से।।9।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठिभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—दोहा—

जिन पद में धारा करूँ, चउसंघ शांती हेत।
शांतीधारा जगत में, आत्यन्तिक सुख देत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंपक हरसिंगार बहु, पुष्प सुगंधित सार।
पुष्पांजलि से पूजते, होवे सौख्य अपार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-1. **ॐ णमो अरिहंताणं अर्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।**

जयमाला

—दोहा —

श्री अरिहंत जिनेन्द्र का, धरूँ हृदय में ध्यान।
गाऊँ गुणमणिमालिका, हरूँ सकल अपध्यान।।1।।

—शंभु छंद—

जय जय प्रभु तीर्थंकर जिनवर, तुम समवसरण में राज रहे।
जय जय अर्हत् लक्ष्मी पाकर, निज आतम में ही आप रहे।।
जन्मत ही दश अतिशय होते, तन में न पसेव न मल आदी।
पय सम सित रुधिर सु समचतुष्क, संस्थान संहनन है आदी।।1।।

अतिशय सुरूप, सुरभित तनु है, शुभ लक्षण सहस आठ सोहें।
अतुलित बल प्रियहित वचन प्रभो, ये दश अतिशय जनमन मोहें।।
केवल रवि प्रगटित होते ही, दश अतिशय अद्भुत ही मानो।
चारों दिश इक इक योजन तक, सुभिक्ष रहे यह सरधानो।।2।।

हो गगन गमन नहिं प्राणीवध, नहिं भोजन नहिं उपसर्ग तुम्हें।
चउमुख दीखे सब विद्यापति, नहिं छाया नहिं टिमकार तुम्हें।।

नहिं नख औ केश बढ़े प्रभु के, ये दश अतिशय सुखकारी हैं।
सुरकृत चौदह अतिशय मनहर, जो भव्यों को हितकारी हैं।।3।।

सर्वार्धमागधीया भाषा, सब प्राणी मैत्री भाव धरें।
सब ऋतु के फल और फूल खिलें, दर्पणवत् भूमी लाभ धरें।।
अनुकूल सुगंधित पवन चले, सब जन मन परमानन्द भरें।
रजकंटक विरहित भूमि स्वच्छ, गंधोदक वृष्टी देव करें।।4।।

प्रभु पद तल कमल खिलें सुन्दर,शाली आदिक बहुधान्य फलें।
निर्मल आकाश दिशा निर्मल, सुरगण मिल जय जयकार करें।।
अरिहंत देव का श्रीविहार, वर धर्मचक्र चलता आगे।
वसुमंगल द्रव्य रहें आगे, यह विभव मिला जग के त्यागे।।5।।

तरुवर अशोक सुरपुष्पवृष्टि, दिव्यध्वनि, चौसठ चमर कहें।
सिंहासन भामंडल सुरकृत, दुंदुभि छत्रत्रय शोभ रहे।।
ये प्रातिहार्य हैं आठ कहे, औ दर्शन ज्ञान सौख्य वीरज।
ये चार अनंत चतुष्टय हैं, सब मिलकर छ्यालिस गुण कीरत।।6।।

क्षुधा तृषा जन्म मरणादि दोष, अठदश विरहित निर्दोष हुए।
चउ घाति घात नवलब्धि पाय, सर्वज्ञ प्रभू सुखपोष हुए।।
द्वादशगण के भवि असंख्यात, तुम धुनि सुन हर्षित होते हैं।
सम्यक्त्व सलिल को पाकर के, भव भव के कलिमल धोते हैं।।7।।

मैं भी भव दुःख से घबड़ाकर, अब आप शरण में आया हूँ।
सम्यक्त्व रतन नहिं लुट जावे, बस यही प्रार्थना लाया हूँ।।
संयम की हो पूर्ती भगवन्! औ मरण समाधीपूर्वक हो।
हो केवल ''ज्ञानमती'' सिद्धी, जो सर्व गुणों की पूरक हो।।8।।

–दोहा –

मोह अरी को हन हुए, त्रिभुवन पूजा योग्य।
नमूँ नमूँ अरिहंत को, पाऊँ सौख्य मनोज्ञ।।9।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठिभ्यो जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

।। इत्याशीर्वादः ।।

1. **ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिकराय श्रीशांतिनाथाय नमः।**
2. **ॐ ह्रीं श्रीं वद वद वाग्वादिनि भगवति सरस्वति ह्रीं नमः।**

श्री ऋषभदेव स्तोत्र

शंभुछंद

हे आदिनाथ! हे आदीश्वर! हे ऋषभ जिनेश्वर! नाभिललन!
पुरुदेव! युगादि पुरुष ! ब्रह्मा, विधि और विधाता मुक्तिकरण।।
मैं अगणित बार नमूँ तुमको, वन्दूँ ध्याऊँ गुणगान करूँ।
स्वात्मैक परम आनन्दमयी, सुज्ञान सुधा का पान करूँ।।1।।

आषाढ़ बदी दुतिया तिथि थी, मरुदेवी गर्भ पधारे थे।
श्री ह्री धृति आदि देवियों ने, माता के चरण पखारे थे।।
शुभ चैत्रवदी नवमी तिथि थी, भगवान यहाँ जब थे जन्मे।
तब मेरु सुदर्शन के ऊपर, अभिषेक किया था इन्द्रों ने।।2।।

वो घड़ी धन्य थी धन्य दिवस, धन धन्य अयोध्या नगरी थी।
श्री नाभिराज भी धन्य तथा, तब धन्य प्रजा भी सगरी थी।।
प्रभु ने असि मसि आदिक किरिया, उपदेशों आदि विधाता थे।
थे युग के आदिपुरुष ब्रह्मा, श्रावक-मुनिमार्ग विधाता थे।।3।।

थे कनक वर्ण धनु पंच शतक, तनु वे युग के अवतारी थे।
आयू चौरासी लाख पूर्व, धारक वृष लक्षणधारी थे।।
दीक्षा से तीर्थ प्रयाग बना, जहाँ नग्न दिगम्बर रूप धरा।
वह चैत्र वदी नवमी शुभ थी, जिस दिन प्रभु ने कचलोंच करा।।4।।

षट् मास योग में लीन रहे, लंबित भुज नासादृष्टी थी।
निज आत्म सुधारस पीते थे, तन से बिल्कुल निर्ममता थी।।
फिर ध्यान समाप्त किया प्रभु ने, आहार विधी बतलाने को।
भवसिंधू में डूबे जन को, मुनिमार्ग सरल समझाने को।।5।।

षट् मास भ्रमण करते-करते, प्रभु हस्तिनागपुर में आये।
सोमप्रभ नृप श्रेयांस तभी, आहारदान दे हर्षाये।।
रत्नों की वर्षा हुई गगन से, सुरगण मिल जयकार किया।
धन-धन्य हुई वैसाख सुदी, अक्षय तृतिया आहार हुआ।।6।।

अक्षयवटवृक्ष तले तिष्ठे, घाती पर ध्यान चक्र छोड़ा।
एकादशि फाल्गुन कृष्णा थी, केवलश्री से नाता जोड़ा।।
त्रिभुवन में ज्ञान लता फैली, भविजन को छाया सुखद मिली।
फिर माघ कृष्ण चौदश के दिन, मुक्तिश्री प्रभु के गले मिली।।7।।

क्रोधादिक रिपु को जीत प्रभो, स्वात्मा से जनित सुखामृत को।
पीकर अत्यर्थतया निशदिन, भव से सु निकाला आत्मा को।।
त्रिभुवन के मस्तक पर जाकर, अब तक व अनंते कालों तक।
ठहरेंगे वे पुरुदेव! मुझे, शुभ ''ज्ञानमती'' श्री देवें झट।।8।।

सर्व दोष निवारण स्तोत्र

(१८ दोष निवारण)

–सोरठा–

दोष अनंतानंत, त्रिभुवन जन में व्याप्त हैं।
आप किया उन अंत,भक्ति भाव से मैं नमूं।।1।।

–भुजंगप्रयात छंद–

क्षुधा व्याधि पीड़ा करे सर्व जन को।
ये आहार संज्ञा हरें घातिहर जो।।
प्रभो केवली के असाता उदय भी।
फले सौख्य में मैं नमूँ नित उन्हें ही।।1।।

तृषा वेदना से पिपासित सभी हैं।
प्रभो आपने स्वात्म अमृत पिया है।।
इसे नाशने हेतु प्रभु को नमूँ मैं।
सदा साम्य पीयूष रुचि से चखूँ मैं।।2।।

महा दोष भीती सभी को सतावे।
प्रभू ने सभी भय डराकर भगाये।।
नमूँ सात भय नाश हेतू तुम्हीं को।
भजूँ सात उत्तम परं स्थान ही को।।3।।

महा क्रोध अग्नी दहे सर्व जग को।
प्रभू ने महाशांति से नाशा उसको।।
इसी क्रोध आश्रित सभी दोष आते।
नमूँ आप को क्रोध को मूल नाशें।।4।।

चिता से अधिक दुःख चिंता करे है।
तनू स्वास्थ्य को हर महा दुख भरे है।।
इसे मूल से आपने नष्ट कीना।
नमूँ मैं न चिंता कभी हो हृदय मा।।5।।

जरा जर्जरी देह करके सुखावे।
इसे नाश कर मूल से सौख्य पावें।।
प्रभो केवली आपको ही नमूँ मैं।
इसे नाश के स्वात्म सुख को भजूँ मैं।।6।।

सदा राग संसार में ही भ्रमावे।
प्रभो आपमें राग मुक्ती दिलावे।।
तथापी तुम्हीं ने सभी राग नाशे।
नमूँ भक्ति से तो अशुभ राग भागे।।7।।

महा मोह सम्राट से सब दुखी हैं।
इसे मूल से प्रभु उखाड़ा सुखी हैं।।

इसी मोह को नाश हेतू नमूँ मैं।
महा ध्वांत हर ज्ञान ज्योती भजूँ मैं।।8।।

करोड़ों भरे रोग इस देह में हैं।
प्रभू रोग को नाश करके सुखी हैं।।
विविध भांति के रोग नित कष्ट देते।
तुम्हें वंदते ये मुझे छोड़ देते।।9।।

महामल्ल मृत्यू ने त्रैलोक्य जीता।
इसे जीत तुम मुक्ति लक्ष्मी गृहीता।।
नमें आपको सर्व दुख के जयी हों।
वही लोक में शीघ्र मृत्युंजयी हों।।10।।

पसीना न तन में प्रभू आप के हो।
प्रभो केवली आपके ये नहीं हो।।
इसे मूल से जो हरें वीतरागी।
उन्हीं को नमूँ मैं बनूं सौख्यभागी।।11।।

प्रभो! एक क्षण में त्रयी लोक लोका।
नहीं ''खेद'' श्रम रंच भी आपको था।।

विषादो महादोष जीता तुम्हीं ने।
नशे दोष मेरा नमूँ भक्ति से मैं।।12।।

महामद कहें आठ विध या असंख्यें।
उन्हीं से लहें नीचगति जीव सब ये।।
हरें मान उनको सभी इंद्र वंदे।
नमूँ आपको सर्वमद को विखंडे।।13।।

रती दोष से प्रीति हो इष्ट पर में।
इसे नाश निज में धरी प्रीति प्रभु ने।।
प्रभू केवली प्रीति नाहीं किसी में
तथापी जगत हित करो नित नमूँ मैं।।14।।

कुतूहलमयी विश्व को देख करके।
करें जोऽतिविस्मय हरें पूर्ण सुख वे।।
सभी कर्मकृत फेर आश्चर्य कैसा।
नमूँ भक्ति से सौख्य हो आप जैसा।।15।।

जो निद्रा के वश वो स्वयं को न देखें।
निजातम दरश पूर्ण को रोक ले ये।।
इसे नष्टकर सर्व जग को विलोका।
नमूँ मैं दरश प्राप्त होवे प्रभू का।।16।।

अनंतों दफे जन्म धर-धर दुःखी मैं।
न हो जन्म फिर से करूँ यत्न वो मैं।।
तुम्हीं ने पुनर्जन्म नाशा जगत में।
अतः नित नमूं तुम चरण नाथ अब मैं।17।।

अरतिदोष से आकुलित चित्त होवे।
इसे नाशकर आपने कर्म धोये।।
यही दोष मुझको सदा दुःख देता।
नमूँ आपको ये भगे शीघ्र भीता।।18।।

–शंभु छंद–

इन दोष अठारह ने जग में, सबको दुख दे दे वश्य किया।
इनसे बच सका नहीं कोई इन त्रिभुवन में अधिपत्य किया।।
जो इनको जीते वे 'जिनेन्द्र', सौ इंद्रों से वंदित जग में।
'सज्ज्ञानमती' देवें मुझको, हर दोष भरें गुण वे मुझमें।।19।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवाय सर्वसिद्धिकराय सर्वसौख्यं कुरु कुरु ह्रीं नमः।

श्री तीर्थंकर स्तवन

(माता के सोलह स्वप्न सहित)

–सोरठा –

जय जय श्री जिनराज, पृथ्वीतल पर आवते।
बरसें रत्न अपार, सुरपति मिल उत्सव करें।।1।।

–शंभु छंद –

प्रभु तुम जब गर्भ बसे आके, उसके छह महीने पहले ही।
सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से, बहु रतनवृष्टि धनपति ने की।।
मरकतमणि इन्द्र नीलमणि औ, वरपद्मरागमणियाँ सोहें।
माता के आंगन में बरसें, मोटी धारा जनमन मोहें।।1।।

प्रतिदिन साढ़े बारह करोड़, रत्नों की वर्षा होती है।
पन्द्रह महिने तक यह वर्षा, सब जन का दारिद खोती है।।
जिनमाता पिछली रात्री में, सोलह स्वप्नों को देखे हैं।
प्रातः पतिदेव निकट जाकर, उन सबका शुभ फल पूछे हैं।।2।।

पतिदेव कहें हे देवि! सुनो, तुम तीर्थंकर जननी होंगी।
त्रिभुवनपति शतइन्द्रों वंदित, सुत को जनि भवहरणी होंगी।।

ऐरावत हाथी दिखने से, तुमको उत्तम सुत होवेगा।
उत्तुंग बैल के दिखने से, त्रिभुवन में ज्येष्ठ सु होवेगा।।3।।

औ सिंह देखने से अनन्त-बलयुक्त मान्य कहलायेगा।
मालाद्वय दिखने से सुधर्ममय उत्तम तीर्थ चलायेगा।।
लक्ष्मी के दिखने से सुमेरु-गिरि पर उसका अभिषव होगा।
पूरण शशि से जन आनन्दे, भास्कर से प्रभामयी होगा।।4।।

द्वयकलशों से निधि का स्वामी, मछली युग दिखीं-सुखी होगा।
सरवर से नाना लक्षण युत, सागर से वह केवलि होगा।।
सिंहासन को देखा तुमने, उससे वह जगद्गुरू होगा।
सुर के विमान के दिखने से, अवतीर्ण स्वर्ग से वह होगा।।5।।

नागेन्द्र भवन से अवधिज्ञान, रत्नों से गुण आकर होगा।
निर्धूम अग्नि से कर्मेंधन, को भस्म करे ऐसा होगा।।
फल सुन रोमांच हुई माता, हर्षित मन निज घर आती है।
श्री ह्री धृति आदिक देवी मिल, सेवा करके सुख पाती हैं।।6।।

पति की आज्ञा से शची स्वयं, निज गुप्त वेष में आती है।
माता की अनुपम सेवा कर, बहु अतिशय पुण्य कमाती है।।

जब गूढ़ प्रश्न करती देवी, माता प्रत्युत्तर देती हैं।
त्रयज्ञानी सुत का ही प्रभाव, जो अनुपम उत्तर देती है।।7।।

इस विध से माता का माहात्म्य, प्रभु तुम प्रसाद से होता है।
तुम नाम मंत्र भी अद्भुत है, भविजन का अघमल धोता है।।
मैं इसीलिए तुम शरण लिया, भगवन्! अब मेरी आश भरो।
निज 'ज्ञानमती' संपति देकर, स्वामिन् अब मुझे कृतार्थ करो।।8।।

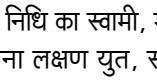

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतस्याद्वाद-नयगर्भितद्वादशांगश्रुतज्ञानेभ्यो नमः।

श्री ऋषभदेव की मंगल आरती

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–क्या खूब दिखती हो.....

प्रभु आरति करने से, सब आरत टलते हैं।
जनम-जनम के पाप सभी, इक क्षण में टलते हैं।
मन-मंदिर में ज्ञानज्योति के दीपक जलते हैं।।प्रभु.।।टेक.।।

श्री ऋभषदेव जब जन्में-हां-हां जन्में,
कुछ क्षण को भी शांति हुई नरकों में।
स्वर्गों से इन्द्र भी आए....हां-हां आए,
प्रभु जन्मोत्सव में खुशियां खूब मनाएं।।
ऐसे प्रभु की आरति से, सब आरत टलते हैं।
मन मंदिर में ज्ञानज्योति.....।।प्रभु.।।1।।

धन-धन्य अयोध्या नगरी-हां-हां नगरी,
पन्द्रह महीने जहां हुई रतन की वृष्टी।
हुई धन्य मात मरूदेवी-हां-हां देवी,
जिनकी सेवा करने आईं सुरदेवी।।
उन जिनवर के दर्शन से सब पातक टलते हैं।
मन मंदिर में ज्ञानज्योति.....।।प्रभु.।।2।।

सुख भोगे बनकर राजा-हां-हां राजा,
वैराग्य हुआ तो राजपाट सब त्यागा।
मांगी तब पितु से आज्ञा-हां-हां आज्ञा,
निज पुत्र भरत को बना अवध का राजा।।
वृषभेश्वर जिन के दर्शन से, सब सुख मिलते हैं।
मन मंदिर में ज्ञानज्योति.....।।प्रभु.।।3।।

इक नहीं अनेकों राजा-हां-हां राजा,
'चंदनामती' प्रभु संग बने महाराजा।
प्रभु हस्तिनागपुर पहुंचे-हां-हां पहुंचे,
आहार प्रथम हुआ था श्रेयांस महल में।।
पंचाश्चर्य रतन उनके महलों में बरसते हैं।।
मन मंदिर में ज्ञानज्योति.....।।प्रभु.।।4।।

तपकर कैवल्य को पाया-हां-हां पाया,
तब धनपति ने समवसरण रचवाया।
फिर शिवलक्ष्मी को पाया-हां-हां पाया,
कैलाशगिरि पर ऐसा ध्यान लगाया।।
दीप जला आरति करने से आरत टलते हैं।
मन मंदिर में ज्ञानज्योति.....।।प्रभु.।।5।।

भजन

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–सारे जग का तू सरताज .....

सारे जग में तेरी धूम-बाबा हो बाबा,
सारे जग में तेरी धूम-बाबा हो बाबा।
सबसे ऊँची तेरी प्रतिमा, मांगीतुंगी तीर्थ की महिमा,
बढ़ गई ज्ञानमती की गरिमा।।सारे.।।
तीर्थंकर प्रथम इस धरा के हो तुम।
कर्मयुग के प्रभो आदिब्रह्मा हो तुम।।
तुमने मोक्षमार्ग बतलाया, जग को जीवनकला सिखाया,
आदिब्रह्मा तू कहलाया।।सारे.।।1।।
मांगीतुंगी में प्रतिमा तेरी बन गई।
ज्ञानमति माता की प्रेरणा मिल गई।।
दुनिया भर में सबसे ऊँची, मूरति देखो बनी अनूठी,
इनसे सुन्दर छवी न दूजी।।सारे.।।2।।
बड़ी प्रतिमा की सब ओर जयकार है।
नाभिनन्दन को मेरा नमस्कार है।।
बढ़ गई जिनशासन की कीरत, धन्य है मांगीतुंगी तीरथ,
बन गई तेरी सुंदर मूरत।।सारे.।।3।।
युग युगों तक अमर जैनशासन हुआ।
'चन्दनामती' अमर जैन आगम हुआ।।
आगम का प्रमाण दरशाया, मूर्ति सांगोपांग बनाया,
जैनीध्वज नभ में लहराया।।सारे.।।4।।

भजन

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–चांदनपुर के गाँव में. .....

मांगीतुंगी तीर्थ से आमंत्रण आया है, हम सब मांगीतुंगी जाएंगे।
मांगीतुंगी जाएंगे, वहाँ पंचकल्याण रचाएंगे।। मांगीतुंगी....।।टेक0।।
विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा, पर्वत पर वहाँ प्रगट हुई।
ऋषभदेव भगवान की इक सौ अठ फुट प्रतिमा राज रही।।
उसी के पंचकल्याणक का अब अवसर आया है,
हम सब मांगीतुंगी जाएंगे।।1।।
विश्वविभूती ज्ञानमती, माताजी की यह महिमा है।
सन् उन्निस सौ छियानवे के, चातुर्मास की गरिमा है।।
उनकी ही प्रेरणा का प्रतिफल सम्मुख आया है,
हम सब मांगीतुंगी जाएंगे।।2।।
विश्व के आश्चर्यों में यह आश्चर्य प्रथम बन जाएगा।
सारा जग इस वीतराग प्रतिमा को शीश नमाएगा।।
पंचमकाल में पहला स्वर्णिम अवसर आया है,
हम सब मांगीतुंगी जाएंगे।।3।।
सभी दिगम्बर जैनों ने अपनी अर्थांजलि दी इसमें।
तभी ''चन्दनामती'' आज प्रतिमा प्रगटी है पर्वत में।।
अब रवीन्द्रकीर्ति ने सब भक्तों को बुलाया है,
हम सब मांगीतुंगी जाएंगे।।4।।